'मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी संघर्ष का नयापन'

अफ़साना बी,

शोधकर्त्री, हिंदी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश–202002

मन्नू भण्डारी हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध कहानीकार एवं उपन्यासकार है। इनके कथा–साहित्य में आधुनिकता का एक नयापन स्पष्ट दिखाई देता है। इन्होंने आम मनुष्य की पीड़ा को बहुत ही गहराई से समझा है। अतः स्त्रियों को संघर्ष का एक नया मार्ग दिखाया है, भले ही वह परिवार के बीच हो या समाज के बीच, अपने लिए संघर्ष की नींव को हमेशा उज्ज्वेलित करना सिखाया है। मन्नू भण्डारी एक भारतीय लेखिका रही है जो विशेषतः 1950 से 1960 के बीच अपने कार्यों के लिए जानी जाती रही है। सबसे ज्यादा वह अपने दो उपन्यासों के लिए प्रसिद्ध रही–पहला 'आपका बंटी' और दूसरा 'महाभोज'। नयी कहानी अभियान और हिंदी साहित्यिक अभियान के समय में लेखक निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वर इत्यादि ने इन्हें अभियान की सबसे प्रसिद्ध लेखिका बताया था।

सदियों से पराधीन रही नारी की स्वतंत्रता की चाह को नारीवादी आंदोलन की संज्ञा मिली है। अपने आरंभिक काल में चले आंदोलन को पुरुष विरोधी आंदोलन के रूप में देखा गया। परन्तु बाद में स्पष्ट हुआ कि यह आंदोलन पुरुष विरोधी न होकर व्यवस्था विरोधी आंदोलन है, जिसके तहत स्त्री का शोषण की मांग है। परिवर्तन उस व्यवस्था में होना चाहिए अथवा उस मानसिकता में होना चाहिए जो नारी को गुलाम बनाए हुए हैं। नारीवाद स्त्री को वस्तु से व्यक्ति बनाने की कोशिश का परिणाम है। इस संदर्भ में 'औरत के हक' में की लेखिका तस्लीमा नसरीन कहती हैं–"जिस दिन समाज स्त्री शरीर का नहीं, उसकी मेधा और श्रम का मूल्य देना सीख जाएगा सिर्फ उस दिन स़्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।"[1] वैश्विक धरातल पर दृष्टिपात करें तो सहज ही ज्ञात होता है कि नारी युगों से पुरुष द्वारा संचालित रही है। बीसवीं शताब्दी में शिक्षा के बढ़ते प्रचार–प्रसार, आर्थिक–आत्मनिर्भरता, सामाजिक जागृति आदि के परिणामस्वरूप पहली बार वह अपने अस्तित्व की ओर जागृत होती है। सन् 1975 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का आयोजन हुआ और इसके बाद पूरे विश्व में नारी अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग हुई है। यहीं से सत्य में भी नारीवादी विचार का आगाज़ होता है। भारतीय साहित्य में भी नारीवादी दृष्टिकोण की शुरूआत लगभग उसी दौर में हुई। हिन्दी में नारीवादी दृष्टिकोण में आरम्भ से पहले अनेक लेखिकाएँ अपने उत्कृष्ट साहित्य लेखन के द्वारा प्रतिष्ठित हो चुकी थी। ऐसी लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मन्नू भण्डारी हिन्दी की वरिष्ठ कहानीकार एवं उपन्यासकार है। उनका पहला कहानी संग्रह 'मैं हार गई' 1957 में प्रकाशित हुआ। इनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनका लेखन कार्य निरंतर जारी रहा। मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी के कई रूप चित्रित होते हैं। इनकी स्त्रियों में कुछ परम्परागत है तो कुछ पढ़ी–लिखी, कामकाजी और एक विशिष्ट–वर्ग की

नारियाँ हैं। ऐसी विशिष्ट वर्ग की नारियाँ अपने अस्तित्व, व्यक्तित्व की रक्षा और प्रतिष्ठा को लेकर सजग है। वह न केवल पुरुष की अद्वितीयता का अविष्कार करती है बल्कि सही मायानों में से उसे चुनौती भी देती हैं। डॉ. सच्चिदानन्द चतुर्वेदी ने लिखा है–"यह स्त्रियाँ इस बात में विश्वास रखती है कि मन का संतोष प्राप्त करने के लिए विवाह भी यदि बाधक बने तो उसे निःसंकोच तोड़ देना चाहिए। क्योंकि देखा गया है कि विवाह प्रायः स्त्रियों के महत्वाकाक्षाओं की पूर्ति में बाधक बनता है।'[2] मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों में ऐसी कई स्त्रियाँ गढ़ी हैं, जो घोर व्यक्तिवादी, स्वतंत्र और अपने वैयक्तिक विकास में विवाह को बंधन स्वीकार करने वाली है। उनमें, 'जीती बाजी की हार' 'आते–जाते यायावर', 'घुटन की प्रतिमा', 'नई नौकरी' की रमा आदि उल्लेखनीय है। 'जीती बाजी' की मुरला को आत्मनिर्भरता के कारण किसी के साथ की जरूरत महसूस नहीं होती। 'घुटन' एक विशिष्ट कहानी है। इसमें मन्नू भण्डारी ने दो ऐसी नारियों की व्यथा–कथा को वाणी दी है, जो परस्पर विरोधी कारणों से व्यथित है। प्रतिमा विवाहित है। उसका पति नेवी में इंजीनियर है। वह जब घर जाता है। तब खूब शराब पीकर प्रतिमा को अपनी बाहों में जकड़ लेता है। प्रतिमा उस जकड़ से मुक्त होने के लिए छटपटाती है। प्रतिमा की यह छटपटाहट घुटन में बदल सकती है। परन्तु मुक्ति में नहीं। दूसरी तरफ मोना की शादी नहीं हुई। वह अपने प्रेमी अरुण से शादी करना चाहती है। परन्तु मोना की माँ नौकरी शुदा मोना की शादी नहीं होने देती। वह मोना की शादी करके अपने आर्थिक हालत बिगाड़ना नहीं चाहती। ऐसे में मोना किसी की बाहों भी में जकड़ जाने के लिए छटपटाती है। कहीं न कहीं छटपटाहट में प्यार की मुक्ति तलाशती नारी है जो बंधन नहीं चाहती। नई नौकरी की रमा अध्यापिका थी। पढ़ना–पढ़ाना उसका शौक था। पति की प्राईवेट फर्म की नई नौकरी के कारण उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है। पति की यह नई नौकरी उसके अस्तित्व और व्यक्तितत्व को उसकी इच्छा–आकांक्षा को बौद्धिक विकास को निगल जाती है। ऐसे में ऐशोआराम भरी जिन्दगी के बावजूद वह संतुष्ट नहीं है। वह मात्र पति की परछाई बनना कतई पसंद नहीं करती। वह आधुनिकता की दौर में नई राह और नये पन में जीना चाहती है। पति कुंदन जब घर से नौकरी के लिए निकलता है। तब वह सोचती है कि कुंदन उसे पीछे छोड़कर बहुत आगे निकल चुका है। यह स्थिति उसके लिए असहाय है। डॉ. सच्चिदानंद चतुर्वेदी का कहना है कि "जो स्त्रियाँ स्वतंत्र विकास करना चाहती है उनके लिए विवाह उसी प्रकार बाधक होता है, जैसे कागजों को स्वतंत्र उड़ने से रोकने के लिए पेपरवेट।" इसी प्रकार कहानी–'आते–जाते यायावर' की मिताली कॉलेज में पढ़ाती है। हॉस्टल में रहती है। बहुत पहले उसका सहपाठी प्रेम के नाम पर संस्कार तोड़ने के बहाने उसे छल चुका है। ऐसे में वैचारिक रूप से पुरुष के प्रति प्रतिशोध की भावना होते हुए भी यायावर किस्म के नरेन से फिर छली जाती है। पुरुष परंपरागत संस्कारों के नाम पर भी नारी से छल–कपट करता है तो भी आधुनिकता के नाम पर भी। इसी को मन्नू भण्डारी ने कहानी में उजागर किया है। कि आते–जाते यायावर किस तरह नारी का शोषण करते है, परन्तु नारी यहाँ आधुनिक होने के नाते संबंध बनाने में हिचक उत्पन्न नहीं होने देती। लेकिन लेखिका ने पुरुष के लिए इस छल–कपट से आक्रोश उत्पन्न करती है।

नारीवादी दृष्टिकोण मन्नू भण्डारी की ऊँचाई और 'यही सच है' कहानियों में तीव्र रूप से व्यक्त हुआ है। 'ऊँचाई' कहानी की शिवानी एक ऐसी नारी है जो एक ही समय पर पत्नी और प्रेमिका दोनों भूमिका अदा करती है। यहाँ एक आधुनिक नयापन दिखाई देता है। विवाहेत्तर संबंध रखकर यदि पुरुष अपवित्र नहीं होता तो स्त्री कैसे हो सकती है और पवित्रता का संबंध

शरीर से नहीं मन से होता है ऐसा कहने वाली पात्र शिवानी अपने पूर्व प्रेमी अतुल के साथ उसके शारीरिक संबंध को न तो अनुचित मानती है, न अनैतिक। यह आधुनिक नारी का नयापन अर्थात् एक से अधिक पुरुषों से संबंध रखते हुए भी स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व की ऊँचाई पर रह सकती है।

'यही सच है' कहानी की दीपा पात्र भी परम्परागत मूल्य को आघात पहुँचाकर नारी को नये रूप में प्रस्तुत करती है। दीपा एक समय निशीथ से प्रेम करती है तो निशीथ से धोखा मिलने पर फिर वह संजय से प्रेम करने लगती है। परन्तु नौकरी के लिए इन्टरव्यू देने गई दीपा को निशीथ से पुनः मुलाकात होती है और वह फिर से उससे प्रेम का अनुभव करती है। पारम्परिक मान्यताओं के दायरे से बाहर निकलने का प्रयास करने वाली दीपा सचमुच एक विद्रोही युवती है। भण्डारी जी ने यहाँ नारी को बंधा हुआ नहीं दिखाया है उनमें अपने लिए भावुकता को जन्म दिया है, जो कई संबंधों को बनाने में अनैतिक नहीं समझती। अनीता राजूरकर ने दीपा के कथन पर लिखा है–"दीपा ने निशीथ को चाहती है, न संजय को वह सिर्फ अपने आपको चाहती है। वर्तमान क्षणों में जो उसे सुख देता है, वह क्षण ही दीपा की दृष्टि में सत्य है।"

'बन्द दरवाजों का साथ' कहानी में पति को बेवफाई आधुनिक स्त्री को किस प्रकार तोड़ देती है इस तथ्य को सामने लाती है, मंजरी विपिन से धोखा खाने पर दिलीप से जुड़ती है। परन्तु एक से धोखा खाने वाली स्त्री चाहकर भी दूसरे के साथ सहज जीवन नहीं जी पाती। मनुष्य न तो छुटी हुई जिन्दगी को छोड़ पाता है और न चुनी हुई जिन्दगी को अपना सकता है। दोनों ओर खींचा जाकर क्षत–विक्षत हो जाता है। मंजूरी की कहानी इसी सच्चाई से रु–ब–रु कराती है। 'एक बार और' भी इसी भाव की कहानी हो इसकी नायिका बिन्नी का चौदह वर्षों तक कुंज के साथ प्रेम संबंध रहता है। कुंज द्वारा अन्य स्त्री से विवाह कर लेने के बाद कुछ लोग बिन्नी को कुंदन से जोड़ने का प्रयास करते हैं। परन्तु नारी का मन कोई ऐसी स्थूल वस्तु नहीं है कि जहाँ चाहे उसे जोड़ा जा सके। मनुष्य का अपनी भावनाओं पर कहाँ अधिकार होता है? इसीलिए बिन्नी चाहते हुए भी नंदन से रिश्ता नहीं बना पाती। वस्तु से व्यक्ति बनने की नारी की इसी जद्दोजहद को मन्नू भण्डारी ने इस कहानी में स्पष्ट दिखाया है।

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' कहानी की दर्शना परित्यक्ता होकर भी किसी भी दया नहीं लेती। और नौकरी के सहारे जी लेने का निर्णय करती है। नारी की हिम्मत और हर पल संघर्ष करने की ताकत हो, मन्नू जी ने दिखाया है वह अबला बनकर जीने में नहीं बल्कि स्वतंत्र जीने में विश्वास करती है।

'दीवार बच्चे और बरसात' कहानी की नायिका अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व पर पति द्वारा आँच आते देखकर शादी के रिश्ते को तोड़ देती है क्योंकि कहीं न कहीं वह सब समझ जाती है कि उसकी स्वतंत्रता। उसका जीवन नष्ट हो सकता है। 'हार' कहानी की दीपा राजनीति के क्षेत्र में पुरुष के एकाधिकार को तोड़कर नारी की श्रेष्ठता सिद्ध करती है। क्योंकि वह बंधनों में बंधकर रहने वाली नारी नहीं बनता चाहती इसलिए पुरुष के वर्चस्व, को तोड़ती है। 'कमरे कमरा और कमरे' कहानी की नीलिमा कॉलेज को होनहार प्राध्यापिका है, परन्तु शादी के बाद वह अपनी नौकरी छोड़ देती है और बाद में उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। अपने 'स्व' को तिलांजलि देने वाली नारी की टूटन नीलिमा में दिखाई देती है। यहाँ एक प्रकार से नायिका हारी हुई प्रतीत होती है।

'क्षय' कहानी में कुंती अपने पिता के सिखाए हुए विश्वासों और सिद्धांतों की प्रतिमा है। वह अनुचित समझौते करने से साफ मना करती

है। यहाँ तक की जूझते हुए वह न टूटती है, न झुकती है लेकिन वही पिता के क्षयग्रस्त होने पर वह इलाज की संभावना और सामर्थ्य को नहीं कर पाती है। इसलिए वह अपने भाई के लिए विश्वास और सिद्धांत से न डिगने वाली कुंती अब ट्यूशन वाली छात्रा के लिए समझौते के द्वारा पर ध्वस्त खड़ी है, उसकी जीवनशक्ति हार रही होती है। 'क्षय' मानो पिता के फेफड़े से बढ़कर आसपास फैल गया है, कुंती के संकल्प तक में भी। यह व्यक्ति की हार से अधिक परिवेश और व्यवस्था के प्रदूषण की कथा है, जिसमें सामान्यतः सदाशय तथा मूल्य–विश्वासी व्यक्ति के लिए कसौटियां उसकी सामर्थ्य से बड़ी और कड़ी हो उठी है। सजा अकेले उस पात्र को नहीं बल्कि पूरे परिवार को ही झेलनी पड़ती है और सारे अपमान और टूट–फूट के बावजूद यह झेलना भी पारिवारिक मदद के द्वारा ही संभव होता है। असमायिक मृत्य में पिता की मृत्यु के रूप में नियति का दंड भोगने वाला दीपू है असामान्य प्रतिभा के धनी दीप जिसके अभिनय कौशल ने पहले ही उसके लिए एक चमकीले सितारे का सम्भाव्य भविष्य दोषित कर रखा है। लेकिन दीपू परिवार की जिम्मेदारियाँ सम्भालने के लिए सब भुला देता है। असमय ही वह छोटे भाई–बहन के लिए पिता का बाना पहन लेता है। मानो असामयिक मृत्यु का भागी केवल पिता ही नहीं पुत्र भी हो। उक्त कहानियां मन्नू भण्डारी के अपेक्षाकृत आरम्भिक कृतित्व के उदाहरण है। इनमें अभी वह दृष्टि मौजूद है जो आगे चलकर एक संतुलित मूल्य भावना का रूप लेती है और जिसे यहां संकलित शेष कहानियों में अधिक प्रौढ़ साथ ही परिपक्व कलात्मक उपलब्धि के रूप में पाया जा सकता है।

निष्कर्षतः मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी का संघर्ष अपनी स्वतंत्रता के रूप में नयापन लिए हुए है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर देखे तो मन्नू भण्डारी नारीवादी आंदोलन से जुड़ी हुई लेखिका है। इसके बावजूद नई शिक्षा और सामाजिक विकास के कारण इनकी कहानियों में व्यक्तित्व चेतना से भरी हुई नारियों का भरमार है। 'स्व' की रक्षा के लिए वह नारियाँ संबंधों को तोड़ने का जोखिम भी उठाती है। इस तरह इनमें एक नयापन दिखाई देता है। नारी का दोयम दर्जा उन्हें स्वीकृत नहीं है। पुरुष केन्द्रित सोच को भले ही वह मिटा नहीं सकती परन्तु उसके सामने प्रश्न चिह्न तो अवश्य खड़ा करती है। अथवा यह कहा जा सकता है कि उस सोच को उखाड़ फेकने के लिए वह निरंतर प्रयत्नशील दिखाई देती है। अपने इसी प्रयत्न के चलते कई बार परिवार और समाज से संघर्ष करती हुई टूटती है। तो कई बार अपने आपको स्थापित भी करती है। सचमुच मन्नू भण्डारी नारी जीवन के नए भाव–बोध को आलेखन करने वाली सशक्त कहानीकार है। जिन्होंने स्त्रियों के मन में उनके जीवन में नया–संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए उत्तेजित किया है।

संदर्भ

1. आर.एस. सिंह, मन्नू भारतीय साहित्य, पृ. 133
2. वही, पृ. 150
3. मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, (घुटन–कहानी) पृ. 6
4. वही–कहानी (नई नौकरी), पृ. 12
5. आर.एस. सिंह, मन्नू भारतीय साहित्य, पृ. 152
6. मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ (कहानी–आते जाते यायावर)
7. वही–कहानी (ऊँचाई), पृ. 25
8. वही–कहानी (यही सच है), पृ. 22
9. आर.एस. सिंह, मन्नू भारतीय साहित्य–पृ. 152

10. मन्नू भण्डारी, दस प्रतिनिधि कहानिया, बंद दराजों का साथ (कहानी), पृ. 26
11. वही, एक बार और (कहानी), पृ. 38
12. वही, तीन निगाहों की एक तस्वीर (कहानी), पृ. 42
13. वही, हार (कहानी), पृ. 54
14. वही, कमरा कमरे और कमरा (कहानी), पृ. 38
15. वही, क्षय (कहानी), पृ. 56